[उत्तरमाला]

{ हिन्दी पद्य साहित्य के इतिहास

से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर }

(1.) 1. शृंगार रस की प्रधानता
2. ब्रजभाषा का प्रयोग
3. रीतिग्रन्थों का निर्माण
4. प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण
5. नारी चित्रण

(2) 1. तुलसीदास – रामचरितमानस
2. सूरदास – सूरसागर

(3) चार शाखाएँ — i. भारतेन्दु युग
ii. द्विवेदी युग
iii. छायावादी युग
iv. प्रगतिवादी युग

(4) i. साहित्यलहरी – सूरदास
ii. लोकायतन – पंत
iii. रश्मि – पंत
iv. त्रिधारा – सुभद्राकुमारी चौहान
v. जमीन पक रही है — गिरिजाकुमार माथुर

(5.) साकेत – मैथिलीशरण गुप्त, गीतावली – तुलसीदास
स्वप्न – रामनरेश त्रिपाठी ग्रन्थि – पंत

(6.) बीजक – कबीर
पद्मावत – जायसी

Scanned by TapScanner

(7.) मैथिलीशरण गुप्त – साकेत
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' — प्रियप्रवास

(8) जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा

(9) (i) शोषण के प्रति आक्रोश (ii) पूँजीवाद का विरोध
(iii) मानवतावादी दृष्टिकोण

(10) आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिकाल

(11) (i) अन्नदाताओं की प्रशंसा
(ii) वीर रस की प्रधानता

(12) रामधारी सिंह दिनकर
शिवमंगल सिंह 'सुमन'
प्रवृत्तियाँ — शोषण का विरोध
मानवतावाद

(13) बिहारी - बिहारी सतसई
घनानन्द - सुजानसागर

(14) (i) रहस्यवादी भावना
(ii) सौन्दर्य एवं प्रेम का चित्रण
→ महादेवी, प्रसाद

(15) प्रयोगवाद सन 1943 ई० के लगभग प्रारम्भ हुआ। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तार सप्तक' के प्रकाशन से प्रारम्भ हुआ। इस युग में घोर निराशा का स्वर एवं कुण्ठा का भाव व्याप्त हुआ।

Scanned by TapScanner

(16) दूसरा सप्तक के कवि — रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती
नरेश मेहता, शकुन्तला माथुर, भवानीप्रसाद मिश्र
सर्वेश्वर बहादुर सिंह, हरिनारायण व्यास।

(17) प्रसाद, भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त

(18) (i) अतियथार्थवादी दृष्टिकोण
(ii) कुण्ठा और निराशा का स्वर

(19) प्रथम तारसप्तक के कवि —
अज्ञेय, मुक्तिबोध, भारतभूषण
प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार, रामविलास शर्मा, नेमिचंद्र जैन।

(20) जब पद्य में नवीन शैलियों का प्रचलन हुआ
और नवीन शैली में कविता रची जाने लगी एवं
नवीन प्रयोग कविता में देखने को मिले
इसलिए आधुनिक युग कहा

(21) भूषण

(22) शृंगारिकता, रीति ग्रन्थों का निर्माण

कवि - भूषण, बिहारी

(23) उ० सं० - 18 देखें

(24) स्मृति की रेखाएँ

(25) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने

Scanned by TapScanner

(26) बिहारी, केशवदास

(27) शृंगारकाल, कलाकाल, उत्तरमध्यकाल

(28) निराला — अनामिका
धूप के धान — गिरिजाकुमार माथुर

(29) ठण्डा लोहा, कनुप्रिया

(30) (i) कामायनी, (ii) कानन कुसुम

(31) (i) जयशंकर प्रसाद (ii) महादेवी वर्मा

(32) (i) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ii) मैथिलीशरण गुप्त

(33) सुमित्रानन्दन पंत

(34) मारसी

(35) (i) कामायनी — जेयशंकर प्रसाद
(ii) लोकायतन — पंत

(36) (i) रामचन्द्रिका — केशवदास
(ii) ललित ललाम — मतिराम

(37) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र — अंधेर नगरी
श्रीधर पाठक — कश्मीर-कुसुम

(38) (i) निर्गुण एवं सगुण ब्रह्म की उपासना
(ii) आडम्बरों एवं रूढ़ियों का खण्डन।

Scanned by TapScanner

(39) (i) राष्ट्रीयता का भाव
(ii) सौन्दर्य एवं प्रेम

(40) मैथिलीशरण गुप्त

(41) प्रा.नि.प.म. → प्रसाद, पंत, महादेवी, निराला।

(42) (i) आश्रयदाताओं की प्रशंसा
(ii) शृंगार, भक्ति एवं नीति से सम्बन्धित रचनाएँ।

(43) 1643 – 1843 ई०

(44) 1843 ई० से अब तक

Answered by:
Arunesh Sir

(45) मुख्य तीन धाराएँ थीं —
रीतिमुक्त, रीतिबद्ध, रीतीसिद्ध।

(46) भारतेन्दु युग — 1857 ई० — 1900 ई० तक

(47) द्विवेदी युग – 1900 – 1918 ई० तक

(48) रामधारी सिंह दिनकर — उर्वशी
शिवमंगल सिंह 'सुमन' – प्रलय सृजन

(49) महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त

(50) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(51) 1943 ई० / अज्ञेय, भग्नदूत

Scanned by TapScanner

(52) दूसरा सप्तक – अज्ञेय / सन् 1951 ई०।

(53) तीसरा सप्तक – 1959 ई०

(54) रामचरित-मानस / पद्मावत

(55) (i) गिरिजाकुमार माथुर (ii) डॉ० जगदीश गुप्त
(iii) भवानीप्रसाद मिश्र (iv) सुदामा पाण्डेय धूमिल

(56) (i) धूपकेधान — गिरिजाकुमार
(ii) गीतफरोश — भवानी प्रसाद

(57) रीतिबद्ध — पद्माकर, मतिराम
रीतिमुक्त — घनानन्द, बोधा, आलम

(58) (i) रसिकप्रिया — केशवदास
(ii) छत्रसालदसक — भूषण
(iii) मधुकलश — हरिवंशराय बच्चन
(iv) साकेत — मैथिलीशरण गुप्त
(v)

(59) पृथ्वीराज रासो — चन्दबरदायी
प्रियप्रवास — अयोध्यासिंह उपाध्याय (हरिऔध)
पल्लव — सुमित्रानन्दन पंत
कामायनी — जयशंकर प्रसाद

(60) कविता कौमुदी — रामनरेश त्रिपाठी

(61) हिमतरंगिणी – माखनलाल चतुर्वेदी
भस्मांकुर — नागार्जुन
यामा — महादेवी,
निशा निमन्त्रण — बच्चन

Scanned by TapScanner

(62) छायावादी युग से

(63) घनानन्द, बोधा

(64) तुलसीदास

(65) (i) साकेत — मैथिलीशरण गुप्त
(ii) गीतावली - तुलसीदास
(iii) लोकायतन - पंत
(iv) युगधारा — नागार्जुन

(66) कबीरदास — बीजक
सूरदास - सूरसागर

(67) निर्गुण भक्तिधारा, सगुण भक्तिधारा
↓ ↓
कंबीरदास सूरदास

(68) हिमतरंगिनी
(69) घनानन्द, बोधा
(70) (i) कविप्रिया — केशवदास
(ii) पंचवटी — मैथिलीशरण गुप्त
(iii) उत्तरायण - डॉ० रामकुमार वर्मा
(iv) रेणुका — दिनकर

(71) डॉ० जगदीश गुप्त

(72) (i) इतिवृत्तात्मकता
(ii) वर्णन प्रधान रचनाएँ।

Gyansindhu Coaching Classes
By: Arunesh Sir
[Hindi]

Scanned by TapScanner

(73) हरिऔध' द्विवेदी युग के कवि हैं.
रचना — प्रियप्रवास / रसकलश

(74) कर्णफूल —
रसवन्ती — दिनकर

(75) (i) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(ii) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

(76) केशव रीतिकाल के हैं — कविप्रिया रचना।

(77) साकेत — मैथिलीशरण
उर्वशी — दिनकर

(78) भारत-भारती — मैथिलीशरण गुप्त

(79) मुकुल — सुभद्राकुमारी
युगान्त — पंत

(80) सांध्यगीत।

(81) i. सौन्दर्य एवं प्रेम।
ii. रहस्यवादी भावना।

(82) अज्ञेय — हरी घास पर क्षण भर
गिरिजाकुमार — शिलापंख चमकीले

(83) (i) शृंगार मंजरी — चिंतामणि
(ii) प्रियप्रवास — हरिऔध
(iii) रसवन्ती — दिनकर

Scanned by TapScanner

(84) हारेको हरिनाम — दिनकर
लोकायतन — पंत

(85) केशवदास — रसिकप्रिया

(86) रामधारीसिंह दिनकर — उर्वशी

(87) द्विवेदीयुग के / साकेत

(88) भवानीप्रसाद मिश्र

(89) (i) जगदविनोद — पद्माकर
(ii) रसिकप्रिया — केशवदास
(iii) शिवाबावनी — भूषण

(90) प्रिय-प्रवास — हरिऔध
मधुशाला — बच्चन

(91) परशुराम की प्रतीक्षा — दिनकर
हुंकार — "

(92) मुकुल, त्रिधारा

(93) भारत-भारती — मैथिलीशरण
पाथेय — रामनरेश त्रिपाठी

(94) (i) प्रतीकों का प्रयोग
(ii) घोर वैयक्तिकता

(95) सुमित्रानन्दन पंत — पल्लव
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला — सरोज स्मृति

Scanned by TapScanner

(96) (i) इतिवृत्तात्मकता
(ii) मानवतावादी दृष्टिकोण

Hindi By: Arunesh Sir

(97) अज्ञेय

(98) नीरजा — महादेवी वर्मा
आकाशगंगा —

(99) त्रिलोचन — धरती, तापके ताए हुए दिन

(100) (i) पथिक — रामेश्वर त्रिपाठी
(ii) उर्वशी — दिनकर
(iii) कामायनी — प्रसाद
(iv) युगधारा — नागार्जुन

(101) रसिक प्रिया — केशव
दीपशिखा — महादेवी वर्मा

(102) उत्तरायण — डॉ० रामकुमार वर्मा

(103) (i) वैराग्य संदीपनी — तुलसीदास
(ii) प्रेमवाटिका — रसखान
(iii) ग्राम्यगीत — पंत
(iv) मुकुल — सुभद्रा कु०

(104) रामधारी सिंह दिनकर

(105) महादेवी वर्मा

(106) घनानन्द रीतिकाल के कवि हैं।
— 'घनानन्द कवित्त' रचना है।

Scanned by TapScanner

(107) i. चिदम्बरा – पंत
ii. पल्लाशवन – नरेन्द्र शर्मा
iii. हिमतरंगिनी – माखनलाल चतुर्वेदी
iv. झरना – प्रसाद

(108) एक पतंग अनन्त में — अशोक वाजपेयी
पंचवटी — मैथिलीशरण
समर्पण — रामावतार त्यागी
अनामिका — निराला

Gyansindhu
Coaching
Classes

(109) उपर्युक्त हैं।

---

(110) रीतिमुक्त / घनानन्द कवित्त

(111) (i) पिघलते पत्थर – रांगेय राघव
(ii) पद्माभरण – पद्माकर
(iii) प्रियप्रवास – हरिऔध
(iv) द्वापर – मैथिलीशरण

(112) तुलसीदास

(113) ① हिमकिरीटिनी — माखनलाल
② चिदम्बरा — पंत
③ पथिक — रामनरेश त्रिपाठी
④ यशोधरा — मैथिलीशरण

(114) — 1959 ई०

यह केवल उत्तरमाला मात्र है। प्रश्न देखने के लिए एजीव प्रकाशन की पुस्तक में देखें/ ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज यूट्यूब चैनल में देखें।

Scanned by TapScanner